उनसे कहो, *यीशु उन्हें प्यार करता है*

परमेश्वर के प्रेम का
व्यक्तिगत प्रकाशन प्राप्त करें

जॉयस मेयर

1 न्यूयोर्क टाइम्स–सर्वोत्तम विक्रेता लेखिका

उनसे कहो,
यीशु उन्हें प्यार करता है

उनसे कहो,
यीशु उन्हें प्यार करता है

परमेश्वर के प्रेम का
व्यक्तिगत प्रकाशन प्राप्त करें

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES®
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from The Amplified® Bible (AMP). Copyright © 1954, 1962, 1965, 1987 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Scriptures marked NKJV are taken from the New King James Version. Copyright © 1979, 1980, 1982 by Thomas Nelson, Inc.

Scriptures marked KJV are taken from the King James Version of the Bible.

Copyright © 2014 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Tell Them I Love Them - Hindi
The Simple Truth About God's Love for You

Printed at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad-500 004

विषय–सूची

	भूमिका	vii
1.	परमेश्वर आपसे प्यार करते हैं!	1
2.	क्या मैं इस योग्य हूँ ?	7
3.	प्रेम का अर्थ है सम्बन्ध रखना	16
4.	प्रेम, भरोसा एवं विश्वास	22
5.	भय से मुक्ति	29
6.	प्रेम का दायरा बढ़ता जाता है	35
7.	परमेश्वर का प्रेम आपको बदल देगा	42
	एक नये जीवन का अनुभव करें	47

भूमिका

मेरा मानना है कि लोगों को परमेश्वर के प्रेम के व्यक्तिगत प्रकाशन की सबसे अधिक आवश्यकता है। मेरा यह भी मानना है कि जयवन्त मसीही जीवन जीने के लिय यह प्रकाशन एक आधारशिला है। हमें परमेश्वर के प्रेम के बारे में बौद्धिक ज्ञान नहीं परन्तु प्रकाशन चाहिये, जब प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर के प्रेम पर मनन–चिंतन करे, अपने जीवन में परमेश्वर के प्रेम को जाने–पहिचाने और उस प्रकाशन को परमेश्वर के लिखित वचन एवं प्रार्थना के माध्यम से खोजने का यत्न करे तब उन्हें यह प्रकाशन केवल पवित्रात्मा ही दे सकता है।

परमेश्वर जगत से प्रेम करते है। और इसलिये उन्होंने यीशु को संसार के लिये बलिदान होने भेज दिया यह जानना और मानना बिल्कुल आसान है। परन्तु यदि आप पृथ्वी पर अकेले व्यक्ति होते, तब भी क्या आपके लिये परमेश्वर का प्रेम इतना होता कि वे यीशु को आपके लिये और केवल आपके लिये मरने भेजते, यह विश्वास करना थोड़ा कठिन है।

अनेक वर्षों तक हताश मसीही के रूप में जीवन बिताने के पश्चात् मुझे परमेश्वचर का प्रेम समझ में आया। परमेश्वर के अनुग्रह से पवित्रात्मा के द्वारा मुझे यह प्रकाशन मिला कि वे मुझसे व्यक्तिगत रूप से प्रेम करते है। इस अकेले प्रकाशन ने मेरे संपूर्ण जीवन और उसके साथ मेरे चाल–चलन को भी बदल दिया।

मेरा विश्वास है कि, जो कुछ आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे, वह परमेश्वर के प्रेम के विषय में आपको नयी अंर्तदृष्टि एवं समझ प्रदान करेगा। मेरा यह भी विश्वास है कि वह व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन प्राप्त करने के लिये आपके भीतर एक नई भूख–प्यास को जागृत कर देगा। मेरा निवेदन है कि आप इस पुस्तक को धीरे–धीरे पढ़े, इसे अध्ययन के रूप में लें और पवित्रशास्त्र के वचनों और विचारों पर जो आगे के पन्नों में आप पायेंगे, चिन्तन–मनन करे।

यह जानते हुये कि, मैं परमेश्वर से अलग होकर कुछ नहीं हूँ, उसके वचन से जो प्रकाशन और समझ मैंने पाई है, परमेश्वर के अनुग्रह में एक पुस्तक के रूप में विनम्रतापूर्वक आपको भेंट करती हूँ।

उनसे कहो,
यीशु उन्हें प्यार करता है

1

परमेश्वर आपसे प्यार करते हैं!

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाए"

—यूहन्ना 3:16

परमेश्वर एक परिवार चाहते हैं, इसलिये परमेश्वर ने हमें अपनी संतान बनाया। वे यह नहीं चाहते कि हम छोटे शिशुओं के समान व्यवहार करें, परन्तु यह कि हम उनकी संतान के समान व्यवहार करे। वे चाहते हैं कि हम उन पर निर्भर करे, अवलंबित हो, उनका सहारा ले, उनसे प्यार करे और वे भी हमसे प्यार करें। वे चाहते हैं कि हम उन पर भरोसा करे और किसी भी जरूरत के समय हम उनके पास जाये। वे आपके साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध रखना चाहते हैं।

हम में से अधिकतर यूहन्ना 3:16 को एक वृहद रूप में लेते हैं, ओह हाँ, मैं जानती हूँ कि यीशु संसार के लिये बलिदान हुआ परन्तु हम केवल

साधारण लोगों का एक समूह नहीं है जिनके लिये यीशु ने जान दी। यीशु ने प्रत्येक व्यक्ति के लिये जान दी। उसने आपके लिये जान दी।

यदि आप पृथ्वी पर एक अकेले व्यक्ति होते, तब भी वे आपके लिये जान देते। वे आप अकेले के लिये सारी पीड़ा सहते। उन्होंने आपके लिये जान दी है! परमेश्वर आपसे बहुत प्यार करता है, वे आपसे अनंतकाल के लिये प्रेम करते है।

एक बार मैं कार चला रही थी और परमेश्वर ने मुझसे मन में बातचीत की, "जॉयस, तुम मेरी आँख की पुतली हो" मुझे पता नहीं था कि यह वचन पवित्रशास्त्र में है। शैतान ने तुरन्त मुझसे कहा, "ऐसा कहना, घमण्ड करना नहीं है ? तुम्हें क्या लगता है, तुम कौन हो ? अब मैं सोचने लगी," मुझे इस तरह नहीं सोचना चाहिये यह हमारे स्वाभाविक सोच विचार के विपरीत है कि हम स्वयं को विशेष व्यक्ति समझें, यह कि हमने वरदान पाया है और दूसरों से भिन्न है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति निजी तौर पर दूसरे से भिन्न है, और परमेश्वर पिता ने हमें ऐसा ही सृजा है।

जब मैं विषय पर सोच विचार कर रही थी, परमेश्वर ने मेरे मन में एक स्त्री की तस्वीर दिखाई जो सुपरबाज़ार में सेब के ढ़ेर के सामने खड़ी थी। उसने सब तरफ देख परख कर एक सेब चुना जो सबसे बेहतर था और उसे चुनकर खरीदने लगी। परमेश्वर मुझसे कहना चाह रहे थे कि मैं उनके लिये सबसे उत्तम सेब थी। मैं विशेष थी। सुनने में शायद यह सही न लगे, परन्तु परमेश्वर हम सबसे यही कहते हैं क्या इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर हमें सबसे निकट मान रहे है और यह कह रहे है कि दूसरे अच्छे नहीं हैं, वे कह रहे है कि हम सब

विशेष हैं। यह बात परमेश्वर के वचन में लिखी है और वचन सबके लिये है। तुम सब परमेश्वर की आँख की पुतली हो।

परमेश्वर मुझसे क्या कह रहे थे, मैंने उसे ग्रहण नहीं किया। मैंने अपने बारे में इतनी उत्तम बातें सोचने के लिये स्वयं को दोषी ठहराया। लगभग दो–दिन पश्चात् मैंने बाइबल में भजन 17:8 में पढ़ा, मुझे लगा मानों वह वचन मुझे घूर रहा थाः "अपनी आँखों की पुतली की नाई सुरक्षित रख; अपने पंखों के तले मुझे छिपा रख, मैंने कहा, ओह, वह सचमुच परमेश्वर थे जो बात कर रहे थे। मैं परमेश्वर की आँख की पुतली हूँ" जितना अधिक मैंने इस विषय पर विचार किया उतने लम्बे समय तक, हर बार मैंने स्वयं को एक विशेष व्यक्ति के रूप में अनुभव किया।

लोगों के हृदय में एक भूख–प्यास, लालसा और अभिलाषा होती है कि, कोई उनसे प्रेम करे। परमेश्वर ने हमें इसी प्रकार सृजा है। अनेक व्यक्ति यह मानते हैं कि परमेश्वर संसार से प्रेम करते है, यीशु से प्रेम करते है, परन्तु उनसे प्रेम करते है, यह मानने में कठिनाई महसूस करते हैं। परन्तु परमेश्वर का वचन सिखाता है कि परमेश्वर उनसे उतना ही प्रेम करते है जितना प्रेम वे यीशु से करते है। वे आपसे भी उतना ही प्रेम करते है जितना प्रेम वे यीशु से करते है। आइये, हम यूहन्ना 5:20 पढ़े :

"क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है, और जो–जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है, और वह इन से भी बड़े काम उन्हें दिखायेगा, ताकि तुम अचम्भा करो।"

यहाँ परमेश्वर का कथन है, "मैं यीशु के द्वारा इन महान् कामों को कर रहा हूँ और इनसे भी महान कामों को करूँगा ताकि तुम अचम्भा करो" (लेखक का मत) क्या आप जानते हैं कि, किसी बात पर अचम्भा करना ठीक है, परमेश्वर के काम पर चकित होना अच्छा है ?

हम इन वचनों को पढ़ते हैं – परन्तु अकसर उन बातों को खो देते है जो परमेश्वर चाहते हैं कि हम करे। वे चाहते है कि हम उन महान् कामों को जो उन्होंने यीशु के द्वारा किये देखे और चकित होकर कहे, "वह अद्भुत है, हे परमेश्वर मसीह के द्वारा आपने कितने अद्भुत काम किये हैं" तब वे चाहते हैं कि आप बाइबल में यूहन्ना 14:12 में लिखी बात पर ध्यान दे जहाँ यीशु ने कहा, "जो मुझ पर विश्वास रखता है ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े–बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।"

परमेश्वर वैसे ही काम वरन् उनसे भी महान् काम आपके द्वारा सम्पन्न करेगा, जो उसने यीशु के द्वारा किये हैं क्योंकि यीशु अपने पिता के पास चला गया है। क्या आप इस बात पर विश्वास करते है? क्या आप सचमुच यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपसे प्यार करता है और आपका उपयोग करेगा ?

एक दिन जब मैं वचन का अध्ययन कर रही थी प्रभु ने मुझसे बातें की, "जॉयस, मैं लोगों के लिये प्रतिदिन कितने काम करता हूँ क्योंकि मैं उनसे प्यार करता हूँ और वे अकसर इसे समझ नहीं पाते। वे इसे न तो समझते है ना पहिचान पाते है। मैं तुम्हें केवल एक उदाहरण देता हूँ प्रतिदिन जब मैं सूरज से कहता हूँ 'उदय हो' तब मैं यह बात जॉयस के लिये, बेट्टी के लिये, जैमी के लिये और आपके लिये (आप यहाँ अपना नाम लिख लीजिये) भी कहता हूँ।"

रूकिये और इसके बारे में सोचिये। सूर्य प्रतिदिन आपके लिये आकाश में उगता है। जी हाँ, सूर्य! परन्तु हम यह मानकर चलते है कि उसे तो निकलना ही है। हमयह जानते है कि सूर्य प्रतिदिन निकलने वाला है परन्तु, वह आपके लिये निकलता है। जब मौसम के अनुसार बरसात होती है, वह आपके लिये होती है, जब बर्फवारी होती है, वह आपके लिये होती है। परमेश्वर आपसे कितना प्यार करते है!

व्यवस्थाविवरण 7:9 में लिखा है – "इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है वह विश्वास योग्य ईश्वर है; और जो उससे प्रेम रखते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते है उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा पालता, और उन पर करूणा करता रहता है।"

क्या आपको नहीं लगता कि हज़ार पीढ़ी तक परमेश्वर की वाचा एक पर्याप्त कारण है कि आप उसके प्रेम को पाना चाहे? वह अनंतकाल का परमेश्वर है और आप उसे थका नहीं सकते। हममें से अधिकांश यह सोचते है कि अपनी गलतियों और बिगड़ी बातों के द्वारा उन्होंने परमेश्वर को थका दिया है। परन्तु आप ऐसा नहीं कर सकते। प्रेम कभी थकता नहीं और परमेश्वर आपसे प्रेम करते हुये कभी थकेंगे नहीं। प्रेम करना परमेश्वर के लिये एक क्रिया नहीं है, वह स्वयं प्रेम है।

इस पृथ्वी पर जो थे, या कभी होंगे, ऐसे सबसे बुरे और दुष्ट पापी भी यदि यीशु के मुँह पर थूक दे और कहे "मुझे तुमसे क्या लेना–देना, मैं नरक जाने में संतुष्ट हूँ," परमेश्वर उनसे भी प्रेम करते हैं। फिर वह उनसे जो चुने गये है और परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिये अलग किये गये है, क्या प्रेम नहीं करेगा ?

शायद आप यह कह चुके हो कि, "मैं यीशु को ग्रहण करता हूँ और उससे प्रेम करता हूँ," परन्तु मैं आपसे पूछना चाहूँगी कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं इस बात पर आप कितना विश्वास करते हैं?

आपके लिये यह बिल्कुल सीधा और सरल संदेश है परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं, परन्तु यह आधारशिला है उन सब बातों के लिये जो परमेश्वर चाहते हैं कि आप समझे।

आप परमेश्वर की बातों को कितना भी सीखें और उनका अध्ययन करने और खोजने में कितना भी परिश्रम करे, यदि आप इस सत्य को स्वीकार नहीं कर सकते कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं, तो आप काफी दूर तक नहीं जायेंगे। परमेश्वर का प्रेम आपके विश्वास, पाप से स्वतंत्रता और निर्भय होकर दूसरों की सेवकाई के लिये आगे कदम बढ़ाने हेतु नीवं का पत्थर है। क्या आप परमेश्वर के इस प्रेम को स्वीकार करेंगे ?

2

क्या मैं इस योग्य हूँ ?

"और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्रात्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

क्योंकि जब हम निर्बल ही थे (स्वयं की सहायता करने में असमर्थ) तो मसीह ठीक समय पर भक्ति–हीनों के लिये मरा।

किसी धर्मीजन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे।

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने (निज) प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिये मरा (अर्थात् मसीहा–परमेश्वर का अभिषिक्त)

सो जबकि हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, (परमेश्वर के साथ सही सम्बन्धों में लाये गये) तो उसके द्वारा क्रोध से क्या न बचेंगे ? (यह निश्चित है) क्योंकि बैरी होने की

दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर (यह निश्चित है कि) उसके पुनरूत्थान के जीवन के कारण हम उद्धार (प्रतिदिन पाप की आधीनता से छुटकारा) क्यों न पाएगे ?"

—रोमियों 5:5—10

हममें से अधिकांश जब तक किसी बात में उलझ नहीं जाते, तब तक तो विश्वास कर सकते है कि परमेश्वर हमसे प्यार करता है। बहुत से लोग अपने आपको बहुत अधिक पसंद नहीं करते इसलिये वे मानते हैं कि वे परमेश्वर को प्रभावित नहीं कर सकते और परमेश्वर उनसे प्रेम नहीं कर सकता। परन्तु बाइबल में लिखा है, "कि मनुष्य क्या है जो तू उस पर दृष्टि करे और उसे स्मरण रखे" (भजन 8:4) हम परमेश्वर की सृष्टि है और वह हमसे प्रेम करता है तो इसलिये कि वह प्रेम है। (1 यूहन्ना 4:16)

वह आपसे प्रेम करता है और आप विशेष है। इसका अर्थ है कि आप निश्चित रूप से अलग और दूसरों से भिन्न है। आपको मेरे समान बनने की आवश्यकता नहीं है और न मुझे आपके समान बनने की, यदि हम एक दूसरे के समान बनने की कोशिश करेंगे तो हमारी दशा—खराब हो जायेगी। ऐसा करके आप शैतान को यह कहने का अवसर प्रदान करेंगे कि आप इस योग्य नहीं है! परन्तु वास्तव में परमेश्वर के निकट आपको योग्य होने या बनने की आवश्यकता नहीं है।

क्या यीशु ने बलिदान इसलिये दिया कि आप बड़े महान् और अद्‌भुत व्यक्ति है, या इसलिये कि वह आपसे प्रेम करता है ? बाइबल कहती है कि जब उसका प्यार उसे आपके लिये मरने हेतु तैयार कर सकता

है तब उसके लहू के कारण धर्मी ठहराये जाने पर, वह आपसे कितना अधिक प्यार करेगा ? (रोमियों 5:8,9) वह आपसे इतना प्रेम करता है कि प्रतिदिन होनेवाली गलतियों को ढांप देता है। वह आपसे इतना प्रेम करता है कि हर दिन गुज़ारने के लिये सामर्थ और जय देता है।

परमेश्वर ने एक दिन एक उदाहरण देकर मुझे समझाया कि वह हमारी गलतियों और कमियों को किस दृष्टि से देखता है। कल्पना कीजिये कि एक छोटी बच्ची 3 या 4 वर्ष की, अपनी माँ को हमेशा काम करते हुये देखती थी। वह अपनी माँ से इतना प्यार करती थी कि एक दिन छोटी बाल्टी में पानी भरकर और सफाई करने का कपड़ा लेकर सामने के दालान में खिड़की को साफ करने लगती है। वह रगड़–रगड़ कर खिड़की साफ करती है और कागज के पुर्जों से खिड़की को पोंछती है।

वैसे तो खिड़की और भी गंदी हो जाती है, साबुन और कपड़े से पोछने के दाग इत्यादि वहाँ दिखाई देते हैं और जब आप देखती है कि उसने आपके सबसे अच्छे सफाई के कपड़े को खराब कर दिया है, आपको लगता है कि उसकी गर्दन पकड़कर मरोड़ दे। परन्तु वह आती है और पास आकर अपनी मधुर धीमी आवाज़ में कहती है, "माँ, माँ, मैंने खिड़की को धो दिया है मैंने आपके लिये इतनी मेहनत की है, मैं आपसे प्यार करती हूँ, माँ।"

एक प्रेममयी माँ कहेगी, "वॉह तुमने बहुत अच्छा काम किया है, मदद करने का शुक्रिया" तब, जैसे ही बच्ची वहाँ से हटे वह उसे फिर से साफ करने में जुट जायेगी और बाद में उसे हिदायत देगी कि ऐसा फिर कभी मत करना।

परमेश्वर ने मुझे बताया कि वह हमारे लिये यही करता है। वह हमेशा हमारे द्वारा किये गये बेतरतीब काम को सुधारता है। यदि आप किसी काम को करना जानते हैं कि उसे सर्वोत्तम ढंग से कैसे करें तो परमेश्वर आपसे यही अपेक्षा रखते है। वे आपसे उस कामकी अपेक्षा नहीं करते तो आपको नहीं आता। यदि आप यह कहने के लिये सहमत है कि, "आप सही है, मैं गलत हूँ, मैंने कोशिश की पर मैं बदल नहीं सका," वे आपको बदल सकते है। तब वे आपको अवश्य बदलेंगे क्योंकि वे जानते हैं कि बिना उनकी सहायता के आप अपने आपको नहीं बदल सकते हैं।

> "क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि परमेश्वर उसे अपना आत्मा नाप–नापकर नहीं देता है (परन्तु बिना सीमा के परमेश्वर की आत्मा का दान दिया जाता है)
>
> पिता पुत्र से प्रेम रखता है और उसने सब बातें (विश्वास पूर्वक सौंप दी है) वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं।"
>
> यूहन्ना 3:34,35

एक बार जब मैं अध्ययन कर रही थी, मैं इस पद पर मनन कर रही थी और मैं आनन्द से चिल्ला पड़ी, जब मैंने पढ़ा कि परमेश्वर अपना अत्मा नाप–नापकर नहीं देता है। वह हमें किसी बात को थोड़ा–सा आज और थोड़ा सा कल, करके नहीं देता।

परन्तु वह कहता है, "आओ जो कुछ मेरा है ले लो" आज परमेश्वर की समस्त सामर्थ और प्रेम आपके लिये उपलब्ध है। आपको जो

चाहिये, उसके पास है, और वह चाहता है कि आप वह सब प्राप्त कर ले क्यों ? क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है। आपको वह सब पाने के लिये योग्य होने या बनने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि योग्य बनने के लिये भी आप कुछ नहीं कर सकते। आपको बेहतर बनने या योग्य बनने की आवश्यकता बिल्कुल नहीं है। परमेश्वर आपको देना चाहते है क्योंकि वह आपसे प्रेम करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 7:6,7 में लिखा है कि – "क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है यहोवा ने पृथ्वी भर के सब देशों के लोगों में से तुझको चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे। यहोवा ने जो तुमसे स्नेह करके तुमको चुन लिया इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशो के लोगों से गिनती में थोड़े थे।"

परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपनी निज प्रजा होने का विशेष दर्जा दिया और कलीसिया के रूप में हम आज वास्तविक आत्मिक इस्राएली है। इस कारण यह वचन जैसे उनके लिये है वैसे ही हमारे लिये भी है। उसने कहा, "मैंने तुम्हें इसलिए नहीं चुना कि तुम पृथ्वी पर सबसे अधिक संख्या में थे।" हमारे लिये इसका अर्थ है कि, मैंने तुम्हें इसलिये नहीं चुना कि तुम कामों में सही थे या तुम इतने अद्‌भुत् थे कि मैंने तुम्हें चुन लिया।

परमेश्वर आगे कहते हैं कि तुम तो संख्या में सबसे कम थे। वास्तव में यदि आप मेरे समान हैं तो शायद सोचेंगे कि आप अन्य दूसरों की तुलना में सबसे बदतर थे, जब आपने उद्धार पाया। परन्तु फिर भी पद 8 में परमेश्वर कहते हैं –

"यहोवा ने जो तुमको बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से, और मिस्र के राजा फिरौन के हाथ में छुड़ाकर निकाल लिया, इसका कारण है कि वह तुमसे प्रेम रखता है, और उस शपथ को भी पूरा करना चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी।"

यह जय–जयकार करने का अवसर है! परमेश्वर कहते है "मैं तुमसे प्रेम रखता हूँ, मैंने तुमसे कहा कि तुम पवित्र हो, तुम विशेष हो, मैंने तुम्हारे भले और अद्‌भुत् होने के कारण तुम्हें नहीं चुना परन्तु इसलिये चुना कि मुझे तुमसे प्रेम है" क्या आप जानते हैं कि आज परमेश्वर आपसे क्या चाहते हैं ? वे चाहते है कि आप उसके प्रेम को स्वीकार करे और अपना ले।

हममें से अधिकांश लोगों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम अपने आप को नापसंद करते है। हम विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते है या कोई अन्य हमसे प्रेम करता है। हम सोचते हैं, "कैसे कोई मुझसे प्रेम करेगा, मैं इस योग्य नहीं हूँ ?" यदि आप यह विश्वास करते है कि आप अरूचिकर और बदसूरत है तो अवश्य है कि आप ऐसा ही सोचने, दिखने और काम करने लगे। आपके हृदय में आपकी जो छवि है आप उससे ऊपर नहीं उठ सकते।

मेरी सबसे बड़ी समस्या यही थी कि मैं अपने आपको नापसंद करती थी और मैंने कम से कम 75 प्रतिशत समय अपने आप को बदलने की कोशिश में व्यतीत किया। मुझे लगा कि मैं बहुत बोलती हूँ, तो मैंने चुप रहने की कोशिश की। परन्तु जब मैं चुप रहती, मैं अवसाद से घिर जाती और प्रत्येक व्यक्ति यह जानने की कोशिश करता कि मैं क्यों चुप थी। फिर मैं सोचती, परन्तु तुम्हीं ने कहा था कि मैं बहुत बोलती हूँ, मुझे अकेला छोड़ दो, मैं चुप रहने की कोशिश कर रही हूँ।

मैं आपको बता नहीं सकती कि मेरे कितने वर्ष इसी प्रयास में बीत गये और तब भी मैं अपने बड़बोले मुँह के कारण परमेशानी में फँस जाती थी। बहुत से लोग जो अधिक बोलते हैं उनकी शादियाँ ऐसे लोगों से होती है जो बहुत कम बोलते है। उनके चुप रहने पर लगता है कि आपका बड़बोलापन और भी अधिक बढ़ गया है। शैतान आपको बार–बार याद दिलायेगा कि आप बहुत बोलते हैं और इसे ही दोषी ठहराना कहते हैं।

परमेश्वर चाहते हैं कि आप पर दोष न लगे, परन्तु इसके लिये विश्वास और निडरता की आवश्यकता है। क्या आप जानते है कि आप चाहे जितना शर्मिन्दा हो ले, आपके दोषी होने की भावना से एक भी गलत काम जो आप कर चुके हैं, उसका दाम नहीं चुकाया जा सकता ? यह सचमुच कठिन काम है, जब आपने कुछ गलत काम कर दिया है, परमेश्वर आपसे प्रेम करते है यह विश्वास करना कठिन है।

शैतान आपको लगातार और बार–बार याद दिलाता और चोट पहुँचाता रहेगा कि आप कितने अरूचिकार, बुरे और बदसूरत है वह बार–बार इन विचारों को भेजेगा। "तुमने अब यह काम किया है, वह कहेगा," "तुम क्या सोचते हो कि तुम हो कौन ? परमेश्वर तुम्हें कभी आशीष नहीं देंगे, तुम गंदे और बूढ़े। तुम अब किसी को साक्षी नहीं दे सकते, तुम कोई भी काम सही नहीं कर सकते।"

यही अवसर है जब आपके भीतरी मनुष्यत्व से निडरता के उठने की आवश्यकता है, कहिये, "हे पिता, मैंने गलती की है और मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि यीशु के लोहू से धो कर मुझे क्षमा कर दीजिये।

मैं सचमुच ईमानदारी से ऐसा चाहता हूँ, मुझे आपकी क्षमा चाहिये, शैतान, तुम चुप रहो। यीशु ने मेरे पाप का दाम चुकाया है, तुम्हें इससे कोई सरोकार नहीं" और तब आप खुश रह सकेंगे और आगे बढ़ पायेंगे। आनन्द कीजिये। परन्तु शायद आप सोच रहे हो, "मैं बार–बार वही मूर्खतापूर्ण गलती करता हूँ।" मैं भी ऐसा ही सोचा करती थी जब तक कि मैंने दोषी ठहराने वाली इस भावना को दूर नहीं किया। जब आप अपने आप को दोषी ठहराने वाली भावना को दूर कर देंगे आप उस पाप को दोहराना भी बन्द कर देंगे।

पाप का दोष एवं दोषी ठहरने की भावना आपको दबाती चली जायेगी और यहाँ तक कि आप इससे निकलकर स्वतंत्र नहीं हो पायेंगे। दोषी ठहरने की भावना को नकारने के लिये निड़रता चाहिये। आपको निडर होकर अपने विश्वास में कार्य करना होगा और कहना होगा कि आप पर दोष नहीं है। शैतान आपसे कहेगा, "तुम्हारा अभिप्राय है कि तुम पाप करके बुरा महसूस नहीं करोगे ? क्यों, तुम्हें कम से कम कुछ घंटों तक बुरा लगना चाहिये, वह काम जो तुमने किया, सचमुच बुरा था।" आप केवल इतना कहे, नहीं बिल्कुल नहीं, मैं बिल्कुल भी दोषी होने की भावना को स्वीकार नहीं करूंगा शुरू–शुरू में कठिनाई होगी, यह कठिन है, परन्तु केवल 3 या 4 बार के बाद आप इस भावना से लड़ना सीख लेंगे।

यशायाह 53 में 5, 6 और 11 में लिखा है (एम्पलीफाइड बाइबल संस्करण) कि जब यीशु ने हमारे पापों को अपने उपर उठाया उसने उनके दोष को भी (जिसमें दोषी ठहराये जाने की भावना भी शामिल है) अपने ऊपर उठाया। शैतान नहीं चाहता कि आप अपराध बोझ और

आत्मग्लानि से स्वतंत्र हो जायें। क्यों ? क्योंकि यदि आप आत्मग्लानि से पीड़ित रहेंगे, आप परमेश्वर के प्रेम को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। दोषी ठहरने की भावना हमें परमेश्वर से अलग करती और हमारे एवं परमेश्वर के बीच लोहे (स्टील) की दीवार के रूप में आकर खड़ी हो जाती है। जब आप आत्मग्लानि से भरे है आप परमेश्वर पिता का मुख नहीं देख सकते, आप जो देख सकते है वह केवल अपराध बोध और पाप जो आपके सामने है।

आत्मग्लानि से विमुक्त हो जाइये और विश्वास कीजिये कि परमेश्वर ने यह कहा कि उसका अनुग्रह हमारे सभी पापों को ढ़ांप देने के लिये पर्याप्त है। वह आपसे प्यार करता है और उसकी ओर से अनुग्रह एवं क्षमा दोनों निःशुल्क दिये जाने वाले उपहार है, आज ही उन्हें ग्रहण कर ले!

3

प्रेम का अर्थ है सम्बन्ध रखना

"और जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है उसको हम जान गए हैं (समझ, पहचान, विवेक तथा अनुभव से) और हमें उस पर विश्वास है कि (उसमें बने रहते है और भरोसा करते है) परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें बना रहता है।"

—1 यूहन्ना 4:16

आप कैसे परमेश्वर के प्रेम को और अधिक जान सकते और पहिचान सकते हैं ? वह चाहे आपको कितना भी अधिक प्रेम करे यदि आप उसे जान न सके और पहिचान न सके, उससे आपको कोई लाभ नहीं पहुँचेगा। आप जानते हैं कि जब कोई वास्तव में अत्याधिक प्रेम करता है, तब कितना अच्छा महसूस होता है। आप इतना गर्मजोश और अद्‌भुत् महसूस करते है कि आप दुनिया को भूल जाते हैं, क्योंकि कोई आपसे प्रेम करता है। परमेश्वर आपसे प्रेम करते है और वह प्रेम प्रगट

करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि आप रोजाना उनके साथ समय बितायें।

क्या आपके और परमेश्वर के बीच वास्तविक रूप में व्यक्तिगत सम्बन्ध है ? बहुत समय पहिले आपने उद्धार का अनुभव पाया था इसका अर्थ यह नहीं कि आप आज भी परमेश्वर के साथ सहभागिता का भरपूर आनन्द ले रहे है। जब मैं सुबह अपनी आँख खोलती हूँ सबसे पहिले मैं परमेश्वर के बारे में सोचती हूँ। और जब सोने जाती हूँ तब सबसे अंतिम बात जो सोचती हूँ वह भी परमेश्वर है। दिनभर भी मैं परमेश्वर के बारे में ही सोचती रहती हूँ। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं चाहती, इस भरे–पूरे संसार में केवल परमेश्वर को प्रसन्न करना और उसकी सेवा करना और इसे पाने के लिये आप जो कुछ भी करें, वह उचित है।

हमारे भीतर एक खाली स्थान है जिसमें केवल परमेश्वर ही सही रूप से बैठते हैं। दूसरी कोई वस्तु या अभिलाषा उस खाली स्थान को नहीं भर सकती। आप अपने आपसे यह कह सकते है, "मुझे पता है कि मैंने मसीह को ग्रहण कर लिया है।" परन्तु क्या आप उसे सभी परिस्थितियों में प्रत्येक दिन, प्रत्येक मिनट ग्रहण कर रहे हैं ? क्या आप परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण कर रहे हैं ?

परमेश्वर आपसे प्रेम करते है और आप उसके लिये विशेष हैं। उसने हमें उसके साथ सहभागिता करने के लिये सृजा है। हमारे जीवन के लिये यही उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा और इच्छा है। वह प्रत्येक प्रातः अपने सिंहासन से नीचे झुककर कहते हैं, "गुड–मार्निंग, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

मेरी एक मित्र ने प्रार्थना करते समय एक दर्शन देखा। उसने देखा कि परमेश्वर पिता प्रत्येक प्रातः काल जब लोग सोकर उठते हैं तब अमरीका के घरों में जाते है। वे उनसे सहभागिता और बातचीत करने के लिये बिल्कुल तैयार रहते है। वे टेबिल के पास एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं। लोग सोकर उठते हैं, आते हैं और चले जाते हैं, वे आते हैं और चले जाते हैं। वे परमेश्वर से कहते हुये जाते हैं, "हे परमेश्वर, वहाँ थोड़ी देर रूकिये, मैं बाद में आता हूँ, जैसे ही मेरा यह काम समाप्त होगा, मैं आपसे बातचीत करूँगा, बाद में, मैं आपके साथ सहभागिता करूंगा, बाद में।"

दिन समाप्त होता है और उस लड़की का दिल टूट जाता है, यह देखकर कि कोई भी परमेश्वर से बातें करने नहीं आया और परमेश्वर झुके कंधों के साथ निराश होकर वहाँ से चले जाते हैं।

बहुत अधिक व्यस्त मत हो। यदि आपके पास परमेश्वर से प्रार्थना करने और समय बिताने का समय नहीं है, तब आप बहुत व्यस्त है। कुछ समय निकालिये और परमेश्वर से कहिये कि आप उनसे कितना प्रेम करते है। जब सारी बातें समाप्त हो जाती है और केवल जय–जयकार रह जाती है, तब वहाँ और कुछ नहीं केवल परमेश्वर होते हैं, यही वह स्थान है। यदि आपके और परमेश्वर के बीच सम्बन्ध नहीं है, तब उस स्थान तक पहुँचने में आपको देर लग जायेगी। इसका यह अर्थ नहीं कि आप स्वर्ग नहीं जायेंगे परन्तु आपने जयवन्त जीवन जीने का आनन्द खो दिया है।

मैं आपको एक वर्ष परमेश्वर के लिये अलग कर देने का सुझाव देती हूँ जिसमें आप परमेश्वर को प्रेम करने का अवसर दे। अपनी सामर्थ में होकर विश्वास से काम करना बन्द कर दे और विश्वास एवं

सामर्थ के पुरूष और स्त्री न बने। आप केवल अपने पिता की गोद में चले जाये, बच्चों की तरह, और परमेश्वर को आपसे प्रेम करने दे। आप जब तब परमेश्वर को प्रेम करने का अवसर नहीं देंगे, तब तक आप प्रत्युत्तर में परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते।

1 यूहन्ना 4:16 में लिखा है –

"और जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है उसको हम जान गए है (समझ, पहचान, विवेक तथा अनुभव से) और हमें उस पर विश्वास है (उसमें बने रहते, भरोसा करते है कि)..."

क्या आज प्रातः काल सोकर उठने के बाद आपने कुछ समय परमेश्वर के बारे में सोचा कि वह आपसे कितना प्रेम करते है ? जब आप सुबह सोकर उठते है तब सामान्यतः कुछ करना नहीं चाहते। परन्तु आपको अपनी देह को सक्रिय करने और आत्मिक मनुष्यत्व को जागृत करने तथा सभी अद्‌भुत बातों को सम्पन्न करने के लिये अपने मुँह का उपयोग करने की आवश्यकता है।

इसलिये जब आप सुबह सोकर उठे, आप कहे, "हे पिता, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आप मुझसे इतना अधिक प्रेम करते है कि आपने यीशु को मेरे लिये बलिदान होने भेज दिया। हे पिता, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि मैं पवित्रात्मा के साथ हूँ। मैं आपको धन्याद देता हूँ कि आपके पुनरूत्थान की सामर्थ मेरे भीतर वास करती है। हे पिता, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि मैं आज जहाँ भी जाऊँगा आशीष का कारण ठहरूँगा। हे परमेश्वर आप मुझसे प्रेम करते हैं, मुझसे प्रेम करते है, ठीक मेरे इस छोटे घर में, आप मुझसे प्रेम करते है, मैं आपकी विशेष संतान हूँ। मैं आपकी आँख की पुतली हूँ। आप मुझसे प्रेम करते है।"

आप अपने आपसे बात करे और इस बात को जाने तथा संज्ञान रखे कि आप परमेश्वर के प्रेम से घिरे है और उसमें आकंठ डूबे हुये है। बाइबल कहती है कि उसने आपका चेहरा अपनी हथेली पर खोदकर बनाया है (यशायाह 49:16) मैं उसे वहाँ देख सकती हूँ, वे कह रहे है, देखो यहाँ देखो ? क्या यह खूबसूरत नहीं है ? मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ। मेरी संतानों को देखो, मेरी हथेलियों पर बने उनके चेहरों को देखो'' उसने आपका चेहरा वहाँ रखा है ताकि लगातार स्मरण रहे कि वह आपसे प्रेम करता है और आपके साथ सहभागिता रखना चाहता है।

परमेश्वर को धन्यवाद देना याद रखे और उसके साथ सहभागिता करके सम्बन्धों को विकसित करे। कभी–कभी मुँह के बल गिरकर या लेटकर प्रार्थना करें और परमेश्वर को धन्यवाद दें कि आपने उद्धार पा लिया है। प्रत्युत्तर में परमेश्वर से प्रेम करे। यूहन्ना 4:16,17 में पढ़े "...परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बनारहता है और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

इसी (एकत्व एवं सहभागिता में उसके साथ) से प्रेम हममें सिद्ध हुआ और परिपूर्ण हुआ ताकि हमें न्याय के दिन हियाब हो"

परमेश्वर आपसे प्रेम करते है, यह जानकर उस पर आपका विश्वास और उसकी विश्वास योग्यता पर भरोसा बढ़ता है।

परमेश्वर को प्रेम करने का अवसर देने पर सभी आशीषें आपको प्राप्त होगी, बड़ा विश्वास, पाप पर जय, चंगाई, समृद्धता और आनन्द, ये सब बातें तब होगी जब आप परमेश्वर को प्रेम करने की अनुमति देंगे अधिकांशतः हम इसे फेर देते हैं और सोचते हैं, "मुझे ही परमेश्वर से प्रेम करना है।" मेरा विश्वास है कि पहिले आप परमेश्वर को प्रेम

करने दे। मैं नहीं मानती कि परमेश्वर के प्रेम को पाये बिना आप परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

मैं आपसे कह सकती हूँ कि परमेश्वर से सहभागिता रखे और यह कि आपको परमेश्वर से सहभागिता रखने की सचमुच आवश्यकता है। परन्तु आप यह सहभागिता कैसे करेंगे ? जब परमेश्वर ने कहा कि मैं उसके साथ सहभागिता रखूँ, मैं बिस्तर पर बैठ गई और मैंने कहा, "अब मैं क्या करूँ, हे परमेश्वर ?" यह सही है! मुझे पता नहीं कि परमेश्वर के साथ सहभागिता कैसे रखते हैं क्योंकि उस समय तक मुझे वास्तव में पता नहीं था कि परमेश्वर मुझसे कितना प्रेम करते हैं।

आप लोगों के प्रति अपनी भावनाएँ कैसे अभिव्यक्त कर सकते हैं, केवल उनसे प्रेम करके और उनकी सराहना करके, यदि आप नहीं जानते कि वे आपसे प्रेम करते है या नहीं ? आपको डर लगेगा कि कहीं आप मूर्ख न ठहराये जाये, यदि आपको पता है कि वे आपसे प्रेम करेंगे और आपको ग्रहण करेंगे तब यह सुविधाजनक है। जो–जो बातें मैं अपने पति से कह सकती हूँ और कर सकती हूँ वे बातें किसी दूसरे के साथ नहीं की जा सकती, क्योंकि मुझे पता है कि मेरे पति मुझसे प्रेम करते हैं। परमेश्वर के साथ प्रेम में भी ऐसा ही होता है।

इसलिये आगे बढ़े और प्रारम्भ करें, परमेश्वर को एक अवसर प्रदान करें कि वह आपको सहभागिता करना सिखायें। स्वयं से आज और अभी यह प्रश्न पूछें, क्या मैं, परमेश्वर के साथ सुविधाजनक/सहज महसूस करता हूँ ?

4

प्रेम, भरोसा एवं विश्वास

"और (यदि हम) मसीह यीशु में न खतना, न खतना रहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है (सक्रिय होता तथा अभिव्यक्त होता है)।"

—गलगतियों 5:6

हममें से अधिकांश विश्वास प्राप्त करने के प्रयास में समय लगाते है। हम जानते हैं कि विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है (इब्रानियों 11:6) इसलिये हम श्रम करते और अधिक विश्वास पाने का यत्न करते है। परन्तु विश्वास का सम्बन्ध हृदय से है और आप केवल परमेश्वर के साथ प्रेममय सहभागिता रखने के द्वारा उसे पा सकते है। मैं आपको विश्वास करना नहीं सिखा सकती, परन्तु मैं आपको विश्वास से सिद्धान्त सिखा सकती हूँ और आपमें इतनी भूख–प्यास जगा सकती हूँ कि आप उसे पाने के लिये कुछ भी करने का प्रयास करेंगे। यह केवल परमेश्वर से प्रकाशन के द्वारा मिलता है।

विश्वास प्राप्त करने के लिये और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये कठोर श्रम करना बन्द करे और परमेश्वर को अधिक से अधिक अवसर और समय दे, उससे प्रेम करते हुये, सारा दिन परमेश्वर से प्रेम करते रहे और उसे आपसे प्रेम करने का अवसर दें।

> "क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं परन्तु विश्वास से चलते है। (हम अपने जीवन का संचालन और नियमन उस विश्वास से करते है जिसका आधार मनुष्य का परमेश्वर एवं अलौकिक बातों से सम्बन्ध है, और उस भरोसे तथा पवित्र धुन के साथ चलते है)"
>
> 2 कुरिन्थियों 5:7

एक बार मैं इस वचन को पढ़ रही थी, परमेश्वर ने मेरे हृदय में कुछ महत्वपूर्ण बातें कहीं, मैं विश्वास से चलना सीख रही थी। मेरे जीवन की हर बात में मैं विश्वास से चलना चाहती थी, एम्पली फाइड बाइबिल 2 कुरि. 5:7 में लिखा है, हम अपने जीवन का संचालन और नियमन उस विश्वास से करते हैं जिसका आधार परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों पर हमारी धारणा है।

दूसरे शब्दों में मेरे और परमेश्वर के बीच के सम्बन्धों पर मेरी जो धारणा या विश्वास है मैं उसी के आधार पर विश्वास से चलूँगी। क्या आप इस बात को समझते हैं! एक व्यक्ति जो यह मानता है कि वह धर्मी नहीं है, विश्वास से नहीं चल पायेगा। एक व्यक्ति जो यह सोचता है कि वह मिट्टी का एक कीड़ा है और परमेश्वर उससे प्रेम नहीं करते, वह भी विश्वास से नहीं चल पायेगा। बहुत से लोग विश्वास

के अनुसार चलने का प्रयास करते है, परन्तु वे अपने दिल में इन दूसरी बातों का विचार नहीं रखते।

गलतियों 5:6 में लिखा है, विश्वास प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है। परमेश्वर ने मेरे दिल में यह बात डाली, "सब सोचते है कि इस वचन का अभिप्राय है यदि वे दूसरों से प्रेम नहीं करते, उनका विश्वास काम नहीं करेगा। लेकिन यह व्याख्या सही नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है, यदि वे नहीं जानते कि मैं (परमेश्वर) उनसे कितना प्यार करता हूँ उनका विश्वास काम नहीं करेगा।" विश्वास बिना प्रेम के काम नहीं करेगा, लेकिन यह लोगों के लिये हमारा प्रेम नहीं है जो प्रभाव उत्पन्न करेगा, यह परमेश्वर का प्रेम है, उसे प्रेम करने दीजिये, तब आपका विश्वास काम करेगा।

इन बातों में काफी फर्क है। परमेश्वर पर भरोसा करके विश्वास से चलना अर्थात् परमेश्वर पर अवलम्बित होना और सब बातों के लिये उस पर भरोसा करना। आप किसी के साथ यह नहीं कर सकते, यदि आप यह नहीं जानते कि वह आपसे प्रेम करते है। आप यह सब भूल भी सकते है यदि आप परमेश्वर के प्रेम को नहीं जानते, जो आपके लिये है, आप कभी भी परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर पायेंगे।

यदि आप सचमुच जानते हैं कि परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करते हैं, चंगाई प्राप्त करने में आपको कम कठिनाई होगी। इसी प्रकार आर्थिक सहायता प्राप्त करने में आपको अपेक्षाकृत कम कठिनाई होगी।

आपके प्राप्त न कर पाने का कारण है, आप वास्तव में विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर वह सब आपको दे रहे हैं। आप शायद यह करे, "मैं विश्वास करना तो चाहता/ती हूँ पर कैसे करूँ ?"

आपके भीतर परमेश्वर का प्रेम है, और आपको केवल यह करना है कि जब परमेश्वर उसे दर्शाये, आप उसे मान ले। बाइबल कहती है, "हम उससे प्यार करते है क्योंकि उसने पहिले हम से प्यार किया" (1 यूहन्ना 4:19) आपके लिये परमेश्वर से प्यार करना असंभव है। जब तक आप इस तथ्य को न जाने और मानें कि उसने पहिले आपसे प्रेम किया था।

यह सब आपके भीतर है, आपके हृदय में वहाँ भीतर परमेश्वर आप से प्रेम करते है! आप अद्‌भुत है! आप खूबसूरत हैं! आप कीमती हैं! आप विलक्षण हैं! परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं! संसार में कोई भी कभी आपसे उस तरह प्रेम नहीं करेगा जिस तरह परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं।

आपको किसी की ज़रूरत नहीं है, केवल परमेश्वर चाहिये। परन्तु परमेश्वर अन्य लोगों को आपके जीवन में देगा। सत्य यह है कि यदि केवल आप और परमेश्वर होते तो सबकुछ अच्छा होता, परमेश्वर आपके सबसे उत्तम मित्र होते। वे आपके साथी होते यदि आपका साथी नहीं है, वे आपके माता–पिता होते यदि आपके माता–पिता नहीं है।

परमेश्वर आपसे इतना अधिक प्यार करते है। उसी आधार पर आप किसी बात के लिये उस पर विश्वास कर सकते है। परमेश्वर आपसे इतना प्यार करते हैं कि वे चाहते है, आपको वह सब मिल जाये और जब तक आप जानते नहीं कि परमेश्वर क्या चाहते है आप पर्याप्त विश्वास में होकर कार्य नहीं कर पायेंगे ताकि आपको वह प्राप्ति हो सकें।

परमेश्वर को प्रेम करने का अवसर देने पर विश्वास कार्य करता है वह आपके द्वारा दूसरों से प्रेम करने या उस योग्यता के आधार पर

काम नहीं करता। परमेश्वर को आपसे प्रेम करने दे, और दिन भर परमेश्वर को बताते रहिये कि "हे परमेश्वर, मुझे पता है, आप मुझसे प्यार करते है, हाल्लेलूय्याह! हे पिता, मैं आपकी स्तुति करता हूँ, मैं आपके नाम को महिमा देता हूँ।"

स्मिथ विग्गलस्वर्थ परमेश्वर के एक महान् प्रेरित थे। किसी ने उनसे पूछा कि क्या वे प्रार्थना में बहुत लम्बा समय व्यतीत करते है और उन्होंने उत्तर दिया, "मैं शायद ही कभी 30 मिनट से अधिक प्रार्थना करता हूँ, परन्तु बिना प्रार्थना किये 30 मिनिट से अधिक कभी नहीं रहता।" उन्होंने एक बार यह भी कहा कि यदि वे बिना प्रार्थना किये 15 मिनिट से अधिक समय बिताते है तो परमेश्वर से बातचीत न करने के लिये पश्चाताप करते है।

हम गलत सिरे से प्रार्थनाओं का प्रतिफल पाने का प्रयास करते हैं। आप अपने कामों के द्वारा उत्तर या प्रतिफल नहीं पा सकते। परमेश्वर आपको आशीष देंगे क्योंकि वे आपसे प्रेम करते हैं। वह आपको सभी बातें उसी प्रकार प्रदान करेंगे जैसे उन्होंने आपको उद्धार प्रदान किया है।

यदि आप चाहते हैं कि आपके परिवार का कोई सदस्य या अन्य कोई जन उद्धार पा ले, अपने प्रयास न करे, परमेश्वर को आपसे प्रेम करने का अवसर दे। जब आप उस सदस्य को देखेंगे, आप उससे प्रेम करने तत्पर रहेंगे, बाइबल कहती है यदि आप उनसे प्रेम करेंगे और उन्हें शब्दों से या किसी और तरीके से जीतने का प्रयास नहीं करेंगे, आप उन्हें यीशु के पास ले आयेंगे। परमेश्वर का आत्मा उसके प्रेम के प्रभाव में आपके परिवार के सदस्यों को खींच लेगा। परन्तु आप दूसरों

से प्रेम नहीं कर पायेंगे यदि आप परमेश्वर को प्रेम के लिये अनुमति नहीं देगे।

इफिसियों 2:8 में लिखा है, "क्योंकि विश्वास के द्वारा (निः शुल्क) अनुग्रह से (प्रवीणता के आधार पर नहीं) तुम्हारा उद्धार हुआ है..." क्या आप जानते हैं कि उद्धार पाने के लिये आपने कुछ नहीं किया है ? हममें से अधिकांश उद्धार पाते समय बुरी दशा में थे और यीशु ने हमारा उद्धार अच्छे/भले कामों या किसी योग्यता के आधार पर नहीं किया है। इसका केवल एक ही कारण था, परमेश्वर ने हमसे ऐसा (इतना अधिक) प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)

अनुग्रह की परिभाषा इस प्रकार भी दी जा सकती है कि वह हमारे जीवन की सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिये परमेश्वर की योग्यता का उपयोग करने के लिये परमेश्वर की सहमति है। जिस प्रकार परमेश्वर ने हमें पर्याप्त विश्वास दिया कि हमारा उद्धार हो सके उसी प्रकार प्रेम के कारण, वह अनुग्रह देता है कि हम उस विश्वास को पाए जिससे विश्वास कर सके कि वह हमारा चंगा करने वाला है। वह आपको विश्वास देता है कि आप उसके आपूर्तिकर्ता होने पर विश्वास कर सके।

यदि वह विश्वास जो उसने हमें दिया, इतना सक्षम था कि हमारा सभी पापों से उद्धार कर सके, तो वही विश्वास हमारे भीतर इतना सक्षम है कि वह जीवन भर हमारी अन्य दूसरी आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिये काम कर सके। यदि आप विश्वास करते हैं कि

परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और आप इस प्रेम को पहिचानना प्रारम्भ कर देते हैं तब आप उस पर भरोसा करना भी प्रारम्भ कर देंगे। आपको विश्वास हो जायेगा कि परमेश्वर का वचन सत्य है। आप यह जानेंगे कि वह आपसे प्रेम करने के कारण कभी आपसे झूठ नहीं बोलेगा।

एम्पली फाइड बाइबल संस्करण के अनुसार, "विश्वास" का अर्थ है परमेश्वर की सामर्थ, बुद्धि और भलाई पर समग्र रूप से भरोसे और निर्भरता रखते हुये आपके संपूर्ण मनुष्यत्व का उस (परमेश्वर) पर अवलंबित हो जाना (कुलु. 1:4) जब आप परमेश्वर को आपसे प्रेम करने देंगे, आप उससे प्रेम करना और उस पर भरोसा रखना सीख जायेंगे और आप विश्वास करेंगे।

5

भय से मुक्ति

"प्रेम में भय नहीं होता वरन् सिद्ध प्रेम (पूर्ण एवं परिपक्व) भय (आतंक एवं डर के नामों निशान) को मिटा देता है! क्योंकि भय से कष्ट (दण्ड का विचार) होता है और (इसलिये) जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ है (प्रेम की परिपक्वता तक नहीं पहुँच पाया है)।"

—1 यूहन्ना 4:18

हम अकसर यह मानकर खुश रहते है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते है और हम उस पर विश्वास और भरोसा करते है। परन्तु तब अचानक हम पर कोई आक्रमण हो जाता है।

परिस्थितियाँ विश्वास का सबसे अधिक हरण करती है अर्थात् वे बुरी बातें जो हमारे साथ घटती है। जब तक परिस्थितियाँ ठीक–ठाक रहती है परमेश्वर आपसे प्रेम करते है यह विश्वास करने में आपको कोई तकलीफ नहीं होती।

तब शैतान भय और दोष भावना लेकर आपको परमेश्वर के प्रेम से जो आपको स्वतंत्र करता है, अलग करने का प्रयास करता है। "अब कहो, यह क्यों हुआ ?" वह कहता है, "मैं सोचता था कि परमेश्वर तुमसे प्यार करते है, फिर ये बुरी बातें तुम्हारे साथ क्यों हो रही हैं ? तुमने ज़रूर कुछ बुरा काम किया है, परमेश्वर वास्तव में तुमसे नाराज़ है।"

तब आप अपना विश्वास खो देते हैं और परमेश्वर आपकी मदद कैसे करे जबकि आप विश्वास खो चुके हैं। आप विश्वास में दृढ़, विश्वास से भरपूर नहीं है, यदि आप नहीं जानते कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है। यदि आप शैतान की ओर से अपराध बोध और भय को ग्रहण कर लेते है तो आप नहीं जानते कि परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करते हैं।

1 यूहन्ना 4:18 में पढ़िये, एक विलक्षण सामर्थी कथन दिया गया है "सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" मैंने इस वचन पर बार–बार मनन किया और समझने का प्रयास किया, और एक दिन परमेश्वर ने आखिर मेरी आत्मा में इसका अर्थ दिया। सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है और परमेश्वर वह सिद्ध प्रेम है। जब आप जानते हैं कि आपके लिये उसका प्रेम कितना सिद्ध है तब समस्त सृष्टि में ऐसा कुछ नहीं है जो आपको भयभीत कर सके। आपके लिय भयभीत होना असंभव है यदि आप व्यक्तिगत रूप से यह प्रकाशन पा चुके है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है।

यदि आप जानते हैं कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है तब असफलता का भय खाना असंभव है। यदि आप परमेश्वर पर निर्भर है, आप असफल नहीं हो सकते। आप केवल तब असफल हो सकते है जब आप स्वयं पर निर्भर करे। यदि आप जानते हैं कि परमेश्वर

आपसे प्रेम करते है। तो आप असफलता से नहीं डरेंगे, यदि आप जानते है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है, आप तिरस्कृत होने से भयभीत नहीं होंगे।

परमेश्वर का प्रेम इतना प्रभावशाली है कि वह सब बातों को ढांप लेता है। क्या आपको लगता है कि वही परमेश्वर जिसने आपका उद्धार किया और आपको स्वतंत्र किया, आपको दोषी ठहरायेगा? शैतान दोषी ठहराता है, परमेश्वर आपको आपके जीवन में पाप के विषय में निरूत्तर करते हैं और उससे निकलने का मार्ग दिखाते हैं। शैतान आपको दोषी ठहरायेगा और कहेगा कि इससे निकलने का कोई मार्ग नहीं है।

एम्पलीफाइड बाइबल संस्करण में वचन इस प्रकार लिखा है – "प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम (पूर्ण एवं परिपक्व) भय (आतंक और डर के नामों निशान) को मिटा देता है! क्योंकि भय से कष्ट (दण्ड का विचार) होता है और (इसलिये) जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ है (प्रेम की परिपक्वता तक नहीं पहुँच पाया है)" 1 यूहन्ना 4:18।

बहुत से लोग सोचते हैं कि पवित्र शास्त्र के इन वचनों का अर्थ है कि यदि वे परमेश्वर से पर्याप्त प्रेम रखेंगे ताकि वे परमेश्वर से भयभीत नहीं होंगे या आप किसी से पर्याप्त प्रेम रखेंगे ताकि भय आपके जीवन को छोड़कर चला जायेगा परन्तु वचन का यह अर्थ नहीं है।

इसका अर्थ है यदि आप परमेश्वर को आपसे प्रेम करने देंगे। तब आप भयभीत नहीं होंगे। यदि आप अपने जीवन में भय नहीं चाहते आपको परमेश्वर को अवसर देना होगा कि वह आपसे प्रेम करे। विश्वास करके परमेश्वर के प्रेम को आज और अभी स्वीकार करें,

विश्वास में आगे बढ़े और अपने लिये परमेश्वर के सारे प्रेम को ग्रहण कर ले।

जब से परमेश्वर ने मुझे भय से मुक्ति दिलाने वाले अपने प्रेमका यह प्रकाशन दिया मुझे इसका अभ्यास करना था। हमारी कार में गड़बड़ी की, हमने सोचा कि ट्रांसमीटर खराब हो रहा था। हमारी कार में एक बड़ा ट्रांसमीटर था, यदि वह पूरा बिगड़ जाता तो कम से कम 400 या 500 डॉलर का खर्च आता। परन्तु हमारे पास इतने रूपये नहीं थे, इसलिये बदलवाने के बदले हम उसे वैसे ही चलाते रहे।

परमेश्वर ने एक दिन सुबह मुझसे बातचीत की, "जॉयस, आज सारा दिन मुझसे प्रेम करते हुये व्यतीत करो और मैं तुमसे प्रेम करूँगा तुम्हें और कुछ भी नहीं करना है। तुम्हें बहुत बड़ा विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है, तुम्हें सिर्फ मुझसे प्रेम करना है और मुझे अवसर दो कि मैं प्रेम करूँ, पूरे दिनभर, मुझे प्रेम करने दो।"

इसलिये मैं दिनभर अपने आपको सबसे पवित्र विश्वास में बनाये रखते हुये गीत गाती रही, परमेश्वर के लिये स्तुति करते हुये मैंने अद्‌भुत समय गुज़ारा। तब अचानक ही मैंने अपने पति को गैराज में सुना। परन्तु वह अभी 45 मिनट पहिले ही काम पर गये थे! उन्होंने दरवाजा खोलते हुये कहा कि, "मैं कार को पहिले गीयर से ऊपर उठा नहीं पा रहा हूँ, अब हमें कार खड़ी करना पड़ेगा।"

मैंने तुरन्त ही दरवाजा बन्द किया और हँसने लगी। मैंने ऐसा करने का निर्णय नहीं लिया था परन्तु, यह स्वतः हो गया। यह हँसी मेरी आत्मा से निकल रही थी। परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि यह इसलिये था क्योंकि मैंने सारी सुबह परमेश्वर को प्रेम करने का अवसर दिया

और अब मैं हँस सकती थी। परमेश्वर को प्रेम करने देने का अर्थ है, दरवाजे खोलना ताकि विश्वास आपके भीतर से बाहर आ सके। मैं बस हँस रही थी और वह विश्वास था।

अब्राहम भी विश्वास की हँसी हँसा था। जब परमेश्वर ने उसके पास एक दूत भेजे और कहा कि उसके घर पुत्र जन्म लेने वाला है। अब्राहम ने हँसते हुये कहा, "हे प्रभु! आपको महिमा मिले, मैं विश्वास करता हूँ।" परन्तु सारा संदेह और अविश्वास से हँसी और परमेश्वर ने उसके संदेह और अविश्वास के लिये उसे टोका। परमेश्वर ने अब्राहम को नहीं टोका और न एतराज किया क्योंकि उसकी हँसी विश्वास की हँसी थी।

जब शैतान आपके विरोध में आता है और आप जानते हैं कि जो प्रयास वह कर रहा है – मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद है और आपका परमेश्वर उसे सफल नहीं होने देगा, तब आपको डर नहीं लगता और आप विश्वास से हँसते है। आप जानते हैं कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और उसने आपको ढ़ाँककर रखा है।

इस कारण, जबकि मैं कार के ट्राँसमीटर को लेकर हँस रही थी परमेश्वर ने मेरे हृदय में एक शांत और धीमी आवाज़ में कहा, यह अत्याधिक सामर्थशाली आवाज़ थी। उसने मुझसे तीन बार कहा, "यदि तुम इस प्रकार मेरे साथ कार्य करोगी, मैं तुम्हें कभी भी निराश नहीं करूँगा" मुझे लगा वह आवाज़ वायुमण्डल में से आयी "मैं तुम्हें कभी भी निराश नहीं करूँगा, मैं तुम्हें कभी भी निराश नहीं करूँगा।"

यदि आप परमेश्वर पर अवलंबित हो जाये और उसे आपसे प्रेम करने का अवसर दे और उससे प्रेम करे, आप उन सभी प्रयासों को

भूल जायेंगे जो आप विश्वास को सक्रिय करने के लिये काम में लाते है। आप केवल परमेश्वर को आपसे प्रेम करने दे और उससे प्रेम करते जाये और वह आपकी मनोकामना को पूरी करेगा। परमेश्वर का प्रेम आपके भीतर उठेगा और समस्त भय को दूर कर देगा।

6

प्रेम का दायरा बढ़ता जाता है

"और उससे हमें यह आज्ञा (कार्य भार, आदेश, धर्माज्ञा) मिली है कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है वह अपने भाई (विश्वासी) से भी प्रेम रखे।"

—1 यूहन्ना 4:21

आप परमेश्वर की विशेष संतान है। उसने व्यवस्थाविवरण 7:6 में यह कहा है। "यदि आप उसके अनुसार काम करने लगे तो वह इस संसार को बदल देगा। आप सुपर बाज़ार जायेंगे, चेहरे पर मुस्कान लिये, आरै समान की टोकरी पकड़ते हुये कहेंगे," जो कुछ मैं स्पर्श करूँगा, वह आशीषित है, हाल्लेलुय्याह! आज मेरे इस स्टोर में आने के कारण वे धन्य है, स्तुति हो! सारे स्टोर में खुशी से घूमते और गाते हुये और जहाँ कहीं भी आप जाते, अपने आपको विशेष समझे।

जब हम यह जानने लगते है कि हम कितने विशेष है, और उस प्रकार कार्य करते है जैसे परमेश्वर हमसे प्रेम करते है, हम संसार को

यीशु के लिये जीत सकते है। प्रेम का दायरा बढ़ता जायेगा और जंगल की आग की तरफ फैलेगा। परन्तु यदि आप कहीं भी जाये और कहें कि आप मसीही है और दूसरों पर गुर्रायें, कोई फायदा नहीं होगा आप कहें, "मैं मसीही हूँ" "मैं मसीही हूँ" परन्तु जब एक कार आपके ठीक सामने आकर रूकती है और आप चिल्लते है, "बाहर आओ, बुद्दिहीन, मेरे रास्ते से हट जाओ। क्या हम तुम नहीं जानते कि मुझे कलीसिया जाना है ? मुझे मीटिंग/सभा के लिये देर हो रही है, मूर्ख!"

हम अकसर इसी प्रकार का व्यवहार करते हैं। क्या आप जय को प्राप्त करने के लिये तैयार है ? आप आत्मा के क्षेत्र में अपने दायरे को बढ़ाये और जय को प्राप्त करे और कहे, शैतान अब बहुत हो चुका, तुम मुझे झूठ बोलकर और डर दिखाकर बहुत भटका चुके, परन्तु अब मैं यीशु के नाम में जय का पाने जा रहा हूँ क्योंकि परमेश्वर मुझसे प्रेम करते है। और तुम इस बारे में कुछ नहीं कर सकते!

आपके भीतर परमेश्वर का प्रेम आपको भय से मुक्त कर देगा और आप दूसरों तक अपने प्रेम का दायरा बढ़ाने में बिल्कुल नहीं डरेगे। जब परमेश्वर आपसे कहते है कि वह आपके द्वारा महान् कामों को करेंगे क्योंकि यीशु अपने पिता के पास जा चुके हैं, तब वे चाहते हैं कि आप उस पर विश्वास करे। क्या आप सचमुच विश्वास करते है कि परमेश्वर आपको उपयोग करेगे ? परमेश्वर आपको वह सब देगे जिसके लिये आप उस पर विश्वास करते है। आपको विश्वास में आगे कदम बढ़ाने से डर नहीं लगेगा।

मैं आपको बता नहीं सकती कि कितनी बार मैं विश्वास की चट्टान की किनारे पर खड़ी हो जाती थी, बिल्कुल किनारे जहाँ कुछ काम

करते हुये भय लगता था। परन्तु परमेश्वर कहते, "आगे बढ़ो, जॉयस आगे बढ़ो, मैं तुम्हारे द्वारा बड़े–बड़े काम करूँगा, आगे आओ" और मैंने विश्वास से सामने छलांग लगा दी और परमेश्वर ने मुझे एक बार भी लज्जित होने नहीं दिया।

क्या आप जानते हैं कि मैं आगे कदम बढ़ाते समय चिन्ता क्यों नहीं करती और असफलता से क्यों नहीं डरती ? क्योंकि मैं जानती हूँ कि परमेश्वर मुझसे प्रेम करते है। वह मुझसे प्रेम करते हैं, और वे जानते हैं कि मैं उनसे प्रेम करती हूँ और उनके अनुग्रह के कारण मैंने अपना जीवन उनके लिये समर्पित कर दिया है। यदि आपने ऐसा किया है और आप परमेश्वर से प्रेम करते है, और वह आपसे प्रेम करता है, तब इस सृष्टि में ऐसी कोई रूकावट नहीं है जिस पर आप जय न प्राप्त कर सकें।

"कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा ? क्या क्लेश या संकट, या उपद्रव या अकाल, या नंगाई या जोखिम या तलवार? जैसा लिखा है कि तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं, हम वध होने वाली भेड़ों की नाई गिने गये है। परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊँचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।" रोमियों 8:35–39

आपके विचारों में कभी यह बात पूरी तरह नहीं आ सकती कि परमेश्वर कितना अधिक चाहते है कि आप स्वतंत्र हो। जब आप दुखी

होते है, परमेश्वर को चोट पहुँचती है, कभी–कभी आप सुबह उठते है और दिन भर आपका मनोदशा खराब रहता है। क्या आप समझ रहे है कि मैं कैसे दिन की बात कर रही हूँ ? आप पालतू बिल्ली को लात मारते, बच्चों पर चिल्लाते, पड़ोसियों से चिढ़ते और आपके चेहरे पर उदासी, खींझ और अवसाद दिखाई देता। "मैं सारा दिन काम करता रहता हूँ, काम और काम, परन्तु किसी के मुँह से सराहना का एक शब्द भी नहीं निकलता।"

मैं जानती हूँ कि आप कैसा बर्ताव करते है क्योंकि मैंने भी यही किया है। जब बच्चे घर आते, आप सोचते, "क्यों नहीं 7 के बदले 14 घंटे स्कूल में ही रहते ?"

क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर को इससे चोट पहुँचती है ? मैं यह प्रयास नहीं कर रही हूँ कि आपको बुरा लगे। परन्तु मैं आपको यह अहसास दिलाना चाहती हूँ कि यदि आप विश्वास कर ले कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है, तब आप उसके प्रेम का प्रत्युत्तर देना प्रारम्भ कर देंगे। तब उसका प्रेम आपको परिपूर्ण कर देगा और आपसे उमण्ड कर बाहर निकलेगा और उसका दायरा दूसरों तक बढ़ने लगेगा आप स्वतंत्र होकर एक प्रिय व्यक्ति बन जायेंगे और दयालुता का फल आप में फलवन्त होगा।

यदि आप इस तथ्य को थाम ले कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है, आपको आपकी चंगाई मिलेगी, आपकी समृद्धता आयेगी और आपकी सभी ज़रूरते पूरी होगी। क्यों ? क्योंकि आप प्रभु में विश्राम करना प्रारम्भ कर देंगे।

परमेश्वर जो हमें देना चाहते हैं उनमें से अधिकांश हमें नहीं दे सकते, इसका मुख्य कारण है कि हम उन चीज़ों को स्वतः प्राप्त करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि परमेश्वर हमें पकड़ नहीं पाते। परमेश्वर चाहते है कि हम उनमें विश्राम करे और केवल उनसे प्रेम करे। वे चाहते हैं कि आप परमेश्वर को आपसे प्रेम करने दे और उन चीज़ों को प्राप्त कर ले।

शैतान आपको रोक नहीं सकता, यदि आप प्रेम करते है, क्योंकि यदि आप प्रेम करते है तो आप देना जानते है। आप बिना दिये प्रेम नहीं कर सकते।

व्यवस्थाविवरण 7:6 में दिये वचन का अंतिम भाग इस प्रकार है (एम्पलीफाइड बाइबल) "...परमेश्वर ने तुम्हें उसकी विशेष प्रजा और निजधन होने के लिये चुना लिया है।" परमेश्वर ने तुम्हें बुलाहट दी है। शायद अभी आपका काम केवल घर और परिवार की देखभाल करना हो, परन्तु परमेश्वर ने बुलाया है। यदि आप वास्तव में परमेश्वर द्वारा उपयोग होना चाहते है तो आप सचमुच परमेश्वर द्वारा उपयोग किये जा सकते है। परन्तु सबसे पहिले आपको इस नींव को बनाना होगा– आपको यह जानना होगा कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है।

अपनी समस्त आत्मिक उर्जा को संग्रहित करके अपने आप पर मत लगाओ और न अपनी ज़रूरते पूरी करने में खर्च करो। शीघ्रता से, सरल शब्दों में परमेश्वर से कहो कि आप क्या चाहते हैं और अपने विश्वास को दूसरों की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये विकसित करे। यीशु प्रार्थना करते और परमेश्वर से सामर्थ माँगते थे और फिर जाकर उन लोगों की मदद करने लगते जो उनके पास विश्वास लेकर आते थे।

तब वे परमेश्वर का वचन उन्हें सुनाते, उन पर हाथ रखते और वे आश्चर्यकर्म प्राप्त करते थे। वे एक अकेले कोने में बैठकर पूरे समय यह विश्वास करने का प्रयास नहीं करते थे कि परमेश्वर उन्हें वे सब देंगे जो उन्हें चाहिये था। आपको इस बात की आवश्यकता है कि आप परमेश्वर से कहें कि आप क्या चाहते हैं। परन्तु यह केवल वास्तविक बातों के लिये होना चाहिये। आपके जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना होना चाहिये।

सच्ची समृद्धता को सही रूप में परिभाषित करें तो यह परमेश्वर की योग्यता (सामर्थ) को सामने आने वाली आवश्यकता की आपूर्ति के लिये उपयोग करने की क्षमता है। परमेश्वर का प्रेम आपको वह योग्यता प्रदान करेगा कि आप दूसरों की आवश्यकता को प्रथम स्थान दे। क्या आप सोचते हैं कि परमेश्वर आपसे इतना प्रेम करते है कि आपको इस योग्य बनायेंगे कि आप प्रेम का दायरा बढ़ाकर उन लोगों तक पहुँचे जिन्हें प्यार करना आपके लिये कठिन है – जो कुड़–कुड करते है और कभी सराहना नहीं करते ?

जो आपसे प्रेम करते है उनसे प्रेम करने में आपका कुछ नहीं जाता। इसमें कोई कठिनाई नहीं है। कोई भी पुराना पापी यह काम कर सकता है। परन्तु जब आप किसी अप्रिय व्यक्ति से प्रेम करते हैं आप ज़ोर लगाकर प्रेम करते है, करने जाते हैं, और प्रेम करते जाते है। तब परमेश्वर का प्रेम उन्हें बदल देता है।

इसमें शायद एक वर्ष लगे, शायद पाँच वर्ष लगे, शायद 25 वर्ष लगे। परन्तु यह समय लगना उचित है। यीशु ने आपके लिये कितनी लम्बी प्रतीक्षा की थी ?

परमेश्वर आपसे प्रेम करते है और वे उन सबसे भी प्रेम करते है जो आपके आसपास रहते हैं। चाहे उन्होंने उद्धार पा लिया हो या वे अभी भी पापी हैं। वह उनसे प्रेम करता है, और आपका उपयोग करना चाहता है, एक माध्यम के रूप में, ताकि उन पर अपने प्रेम को उण्डेल सके।

आगे बढ़ने से मत डरिये। परमेश्वर का प्रेम आपको समस्त भय और अपराध भाव से विमुक्त करेगा और उसने आपको प्रेम करने की योग्यता दी है। परमेश्वर के प्रेम को अपने आसपास विस्तारित करने के लिये दृढ़–संकल्प कर ले। लोगों से मेल–जोल और मित्रता बढ़ाये। लोगों से मित्रता करना आपका पेशा बन जाये और आप मसीह की देह में लोगों के लिये आशीष का कारण बनें।

लोगों को रात्रिभोज पर बुलाये और लोगों से भेंट करे और उन्हें भेंट करने आने दें। लोगों से हाथ मिलाये, मुस्कुरायें। परमेश्वर ने आपको एक काम दिया है, वह आपको उस तरह उपयोग में लाना चाहता है जिस तरह वह पृथ्वी के किसी अन्य प्राणी को उपयोग में नहीं ला सकता।

ऐसे लोग भी है जिन तक केवल आप पहुँच सकते है, कोई दूसरा व्यक्ति उन तक नहीं पहुँच सकता, परन्तु केवल आप, परमेश्वर से पूछिये कि आप उसके प्रेम के साथ दूसरों तक कैसे संपर्क करें और वह आपको सिखायेगा।

7

परमेश्वर का प्रेम आपको बदल देगा

"प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।"

—1 यूहन्ना 4:10

परमेश्वर हमसे प्रेम करते है, परन्तु मैं नहीं सोचती कि हम में से अधिकांश उस प्रेम को पूरी तरह समझ पाते है। परमेश्वर ने मुझे दिखाया है, इस विषय पर मेरे अध्ययन के द्वारा, कि यदि हम वास्तव में अपनी आत्मा में जान ले कि परमेश्वर हमसे कितना अधिक प्रेम करते है, तो हम आत्मा में काफी उन्नत हो जायेंगे और अकसर हम जैसे है उससे कहीं अधिक परिवर्तित हो जायेंगे और भिन्न दिखाई देगे।

आपके प्रति परमेश्वर के प्रेम पर मनन कीजिये, यह बात आपको परिवर्तित कर देगी। यदि आप स्वयं के विषय में किसी बात को

नापसंद करते है, "यह जानना कि आप जानते हैं" कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते है, आपको बदल देगा।

आपको यह जानकर कैसा लगता है कि कोई आपसे प्रेम करता है? यह जानकर अच्छा लगता है, है ना ? क्या आपको खराब लगता है ? परमेश्वर ने मुझे बताया कि कुछ लोग जो इस पुस्तक को पढ़ेंगे, वे स्वयं को नापसंद करते है। आप जो काम करते है उससे नफरत करते हैं और इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर पाते कि आप एक नई सृष्टि हैं आप लगातार अपने पुराने स्वभाव से लड़ रहे हैं।

जब तक आप अपने आप में बुरा महसूस करेंगे, अपने आप को नापसंद करेंगे और नफरत करेंगे और यह महूसस नहीं करेंगे कि आप कितने विशेष है, तब तक आप कभी विशेष व्यवहार नहीं करेंगे। बाइबल में लिखा है, "क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है" (नीतिवचन 23:7) यह सब इसलिये होता है क्योंकि आपने अब तक 'परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं' इस तथ्य को अपनाया नहीं है। 'परमेश्वर आपसे कितना अधिक प्रेम करते हैं, यह जानना सामर्थ प्रदान करता है।'

परमेश्वर चाहते है कि आप उसके साथ प्रतिदिन सम्बन्ध रखे। इस बात से आप बदल जायेंगे। यदि आप परमेश्वर को प्रथम स्थान नहीं देंगे तो उसे वहाँ रखेंगे, जहाँ से वह जो चाहता है उसे आपके लिये कर नहीं सकता। आपको परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत रूप में समय बिताना होगा, उससे प्रेम करते हुये और आपको प्रेम करने का अवसर देते हुये, इसी बात से आपकी उन्नति होगी और आत्मिक मनुष्यत्व में आप बलवान बनते जायेंगे।

बहुसंख्यक लोगों आलसी होते है, और वे ऐसा नहीं करते। वे यह पसंद करते है कि कोई उनके लिये इस काम को करे। बहाने मत बनाओं। प्रत्येक व्यक्ति जो इसे पढ रहा है और परमेश्वर के साथ सहभागिता नहीं रख रहा है, परन्तु जो मैं लिख रही हूँ उसके कारण निरूत्तर है, शैतान उसके पीछे आकर ज़रूर यह कहेगा, परन्तु तुम्हारे पास करने के लिये और भी काम है।

मैं जानती हूँ, ऐसा होता है, शैतान हमें एक के बाद एक बहाने देता है। परमेश्वर के प्रति गम्भीर रहे और उसे पुकारे। परमेश्वर का वचन और उसके साथ सहभागिता करना आपको बदल देगा। परमेश्वर ने आपको योग्य बनाया है। फिलिप्पियों 4:13 में पौलुस ने लिखा है, "मैं मसीह में जो मुझे सामर्थ देता है, सब कुछ कर सकता हूँ" दूसरे शब्दों में, सारी सृष्टि में ऐसा कुछ नहीं है जो आप यीशु मसीह की सामर्थ में होकर नहीं कर सकते।

जैसे ही परमेश्वर किसी समस्या से इंगित करते हैं, आपको सामर्थ और जय में उठकर उसे परास्त कर देना है। यदि आप उठेंगे और परमेश्वर के प्रेम को स्वयं के लिये ग्रहण करेंगे और उस गंदे, दुष्ट शैतान की बात सुनने से मना कर देंगे, जो आपसे कहता है कि आप कितने बुरे है और आपमें कुछ भी अच्छा नहीं है, तो आप जयवन्त होकर कार्य करना आरम्भ कर देंगे।

अभी शायद आप अच्छा काम नहीं कर पा रहे, परन्तु जब आप विश्वास करेंगे कि आप आंतरिक रूप से एक नयी सृष्टि है, आप भिन्न रूप से काम करने लगेंगे। जब तक आप उठकर यह नहीं कहेंगे, "परमेश्वर की स्तुति हो, मैं विशेष हूँ, मैं पवित्र हूँ परमेश्वर ने

मुझे चुना है और मेम्ने के लोहू से परिशुद्ध कर दिया है, अब मैं इस प्रकार कार्य करूंगा, और शैतान मुझे तुम्हारी परवाह नहीं, मैं कितनी भी गलतियाँ करूं, मैं आगे बढूँगा," तब तक आप जरा भी नहीं बदलेंगे और न अलग तरीके से काम करेंगे। "परमेश्वर मुझे संभालने और आगे बढ़ाने के लिये पर्याप्त है। वह मेरी गड़बड़ी और उलझाव को दूर करेगा और सुधारता जायेगा।"

आपको कौन सी समस्याएँ या कठिनाईयाँ, रोक सकती है जबकि आप जानते है कि आप जानते है – परमेश्वर आपसे प्रेम करता है? एक भी नहीं। आप सब बातों में जयवन्त होंगे।

क्या आप जीतने वाले बनना पसंद करेगे ? उत्तर दें, तब क्या आपको जीत हासिल करने के लिये कुछ चाहिये ? यही तरीका है जिसके द्वारा आप बढ़ेगे। यदि आपके पास कोई समस्या या कठिनाई नहीं है और ऐसा कुछ नहीं है जिसे आप जीतना चाहे, तब आप अपने विश्वास को किस पर आजमायेंगे ?

आपके पास आनेवाली कठिनाईयों को उन्नति करने के लिये एक अवसर के समान उपयोग करे। पता करे कि परमेश्वर क्या करेंगे क्योंकि वे आपसे प्रेम करते हैं! यदि आप परमेश्वर पर अवलंबित हो जायेंगे और उसे आपसे प्रेम करने का अवसर प्रदान करेंगे और उससे प्रेम करेंगे, तब आप अपने प्रयास भूल जायेंगे कि कैसे विश्वास को सक्रिय करे और परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश कर जायेंगे।

जब आप परमेश्वर को आपसे प्रेम का अवसर देंगे और उससे प्रेम करेंगे, तब हर समय, हर जगह आप मदमस्त होकर विचरण

करेंगे जैसे आपने आत्मा का दाखमधु पी लिया है। तब आपके जीवन की कोई भी परिस्थितियाँ आपको प्रभावित नहीं कर पायेगी क्योंकि आप परमेश्वर के प्रेम में होकर कार्य करेंगे।

जब मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, पहले तीन सप्ताह मैं परमेश्वर के प्रेम में मदमस्त, चूर हो गयी थी। लोग मुझसे कहते थे, "क्या हो गया है तुमको ? तुम बिल्कुल बदलीसी लगती हो मुझे विश्वास नहीं होता, जॉयस, तुम्हें आखिर क्या हुआ है ?" ये व्यक्ति तीन सप्ताह बाद आकर मुझसे पूछते थे, "तुम्हारे जीवन में क्या हुआ है ?"

मैं बदल गयी हूँ यह समझाने के लिये मुझे एक शब्द भी नहीं कहना पड़ा। वे देख सकते थे। यदि आप परमेश्वर के प्रेम मे प्रचलित होंगे, तो आप हर समय मुस्कुराते रहोगे। आप सुन्दर लगेंगे, आपके भीतर उर्जा और सामर्थ होगी। आप दूसरों की सेवकाई करने में समर्थ बन जायेंगे क्योंकि आप पवित्रात्मा में हर समय इतने सक्रिय और उर्जावान रहेगे कि आपकी हर एक आवश्यकता की आपूर्ति हो जोयगी।

अपने आप से कहिये, "परमेश्वर मुझसे प्रेम करते है" हाल्लेलूय्याह, परमेश्वर मुझसे प्रेम करते हैं। मैं उसकी विशेष संतान हूँ, परमेश्वर मुझसे प्रेम करते हैं! "अब आगे बढ़े और विश्वास में एक बड़ी छलांग मारे और विश्वास करें।"

एक नये जीवन का अनुभव करें

यदि आपने कभी भी यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानकर स्वीकार नहीं किया है, मैं आपको आमंत्रित करती हूँ कि आप ऐसा करें, आप यह प्रार्थना कर सकते हैं और यदि इस विषय में आप सचमुच गम्भीर है, आप मसीह में एक नये जीवन का अनुभव पायेंगे।

> हे पिता परमेश्वर, मैं आपके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ, जो संसार का उद्धारकर्ता है। यह मेरे लिये क्रूस पर मरा और उसने मेरे पापों का उठाया। वह नरक में उतरा और उसने मृत्यु और कब्र पर जय प्राप्त की। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मृतकों में से जी उठा है और अब आपके दाहिने ओर विराजमान है, हे यीशु, मुझे आपकी आवश्यकता है। मेरे पापों को क्षमा करें, मेरा उद्धार करे। मुझमें वास करे। मैं नया जन्म पाना चाहता हूँ।

अब विश्वास कीजिये कि यीशु आपके हृदय में निवास करने लगे हैं। आपके पाप क्षमा हो चुके हैं और आप धर्मी ठहराये जा चुके हैं और आप स्वर्ग जायेंगे।

अपने आस–पास एक उत्तम कलीसिया की खोज करें जहाँ परमेश्वर का वचन सिखाया जाता है और मसीह में उन्नति करें। परमेश्वर के वचन के ज्ञान के बिना आपके जीवन में कुछ नहीं बदलेगा। यूहन्ना 8:31,32 में लिखा है, "यदि तुम मेरे वचनों में बने रहो... तुम मेरे चलें ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि परमेश्वर के वचन को थामे रहे, इसे अपने हृदय की गहिराई में बसा ले, 2 कुरि. 3:18 के अनुसार, जब आप परमेश्वर के वचन में देखेंगे, आप यीशु मसीह के तेजस्वी स्वरूप में अंश–अंश करके बदलते जायेंगे।

सप्रेम
जॉयस मेयर

लेखिका के बारे में

जॉयस मेयर दुनिया के प्रमुख व्यावहारिक बाइबल शिक्षकों में से एक है। न्यूयॉर्क टाइम्स की यह प्रसिद्ध लेखिका होने के कारण यीशु मसीह के माध्यम से आशा और बहाली पाने में उनकी पुस्तकों ने लाखों लोगों की मदद की है। जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ के माध्यम से, वह मन, मुंह, मूड और व्यवहार पर विशेष ध्यान देने के साथ कई विषयों पर शिक्षा देती है। उनकी खरी संचार शैली उन्हे स्वयं के अनुभवों को खेलकर और व्यवहारिक रूप से साझा करने देता है ताकि दूसरे जो कुछ उन्होने सीखा है दूसरे उसे अपने जीवन में लागू कर सकें। जॉयस ने लगभग 100 पुस्तके लिखीं है जिनका 100 भाषाओं में अनुवाद किया गया है। वह हर साल एक दर्जन से अधिक घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करती है और लोगों को अपने प्रतिदिन के जीवन का आनंद उठाना सिखाती हैं। पिछले 30 वर्षों में उनकी वार्षिक महिला सम्मेलन ने दुनिया भर से 200,000 से अधिक महिलाओं को आकर्षित किया है। जॉयस की दुखी लोगों की दर्द करने का मजुनू आशा के हाथ का आधार है जो कि जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ का अंग है जो उनके गृहनगर सेंट लुइस सहित दुनिया भर में प्रचार कार्यक्रमों में सहायता देती है।

To contact the author in the United States, please write:
Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:
Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org

जानिये परमेश्वर का उपहार, आपके लिये: बिना शर्त प्रेम!

आज परमेश्वर की सामर्थ और प्रेम का एक–एक कतरा आपके लिये उपलब्ध है! और आप इस भीड़ में अकेले व्यक्ति नहीं है। परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं मानों पृथ्वी पर आप एक अकेले व्यक्ति है। समस्या यह है कि अधिकांश लोगों के समान आप भी शायद इसे नहीं समझते... या आप इसे बुद्धि से समझते हैं, हृदय में महसूस नहीं करते। अब आप इसे महसूस कर सकते है, इस प्रेरणास्पद पुस्तक के शक्तिशाली संदेशों में आप पायेंगे,

- अंतःकरण में परमेश्वर के प्रेम को कैसे पहिचानें।
- मैं परमेश्वर के योग्य हूँ या नहीं, यह सोचना कैसे बन्द करें।
- परमेश्वर के प्रेम का अद्‌भुत प्रकाशन कैसे अनुभव कर सकते हैं।
- जीवन की कष्टप्रद परिस्थितियों में परमेश्वर को कैसे पाएँ।
- परमेश्वर का प्रेम आपको सदा के लिये कैसे बदल देगा।

जॉयस मेयर की अंर्तदृष्टि और प्रकाशन जिसने उसके निजी जीवन को बदल दिया, पवित्रशास्त्र के वचनों को बुद्धि के वचनों के साथ पढ़े, जो परमेश्वर के प्रेम को जानने के लिये दरवाजे खोल सकते हैं – परमेश्वर के प्रेम का प्रकाश आप पर व्यक्तिगत रूप से चमके!

JOYCE MEYER MINISTRIES® | Nanakramguda, Hyderabad - 500 008